

चिरुचिरु जीवो प्यारे पार्थिव प्राण ।

रवि कुल रवि मेरे राम भगवान ॥

महाराज दशरथ के पुण्य पुंज रूपा

दीन दुखियुनि हित उदार अनूपा

कल्याण गुण गन सिंधू के समान ॥१॥

श्रीजू लोचन लीला नित्य किंकर हो

प्रिया पद आश्रतनि सत्य सहचर हो

परा प्रेम रूप विश्व वर्तमान ॥२॥

बड़े बड़े रिषी मुनी वन्दनीय स्वामी

सुधा वर्षे मेघ सम नित्य सुखधामी

सनातन किशोरी प्रिया संग वृजमान ॥३॥

दशकंठ प्राणनि के चोरी करण हारे

सत्य धर्म सीमा दशरथ के दुलारे

भक्त रक्षा करने में सदा सावधान ॥४॥

शुभ गुण कोकिल हित रसाल की डारी

जतियो ने नीली जोति हृदय में धारी

प्रिया प्रेम सीमा प्रभू सदां शोभावान ॥५॥

भूमि सुता स्वामिनि से पिया जू सनाथ
अनाथों के नाथ वही अयोध्या के नाथ

रिषि मुनि वेद वाणी करे जांको गान ॥६॥

इन्द्र से भी ऊच किए कृपा से कपि वृंद
वीतराग मुनि मन हारे रघुकुल चंद
मैगसि पै नित नित रहें महरबान ॥७॥